लौहित्य साहित्य सेतु : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

असम में हिंदी : अतीत, वर्तमान और भविष्य

डॉ. मणिदीपा बरुवा

असम में राष्ट्रभाषा के प्रचार के संस्थागत प्रयास के लिए यमुना प्रसाद श्रीवास्तव जी को वर्धा से असम भेजा गया था। उनके प्रयास से 3 नवंबर 1938 ई. को 'असम हिंदी प्रचार समिति' की स्थापना हुई। इस समिति की पहली बैठक 31 दिसंबर 1938 को गुवाहाटी में हुई।

यह सर्वविदित है कि अपने अतीत की सीढ़ियों पर चढ़ता हुआ वर्तमान चलता है और भविष्य का निर्माण करता है। असम उत्तर पूर्वांचल का ऐसा राज्य है, जो उत्तर-पूर्व भारत के अन्य राज्यों से घिरा हुआ है। सिर्फ असम ही नहीं, उत्तर पूर्वांचल के अन्य राज्यों में भी प्राचीन काल से मातृभाषा के बाद अंग्रेजी भाषा का व्यवहार होता आया था । फिर भी प्राचीनतम असमीया साहित्य पर नज़र डालने पर देखा जाता है कि महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव, माधवदेव आदि ने हिंदी के साथ अपना संबंध जोड़े रखा था।

असमीया भाषी लोगों में हिंदी सीखने का आग्रह अंग्रेजों के आगमण के बाद ही बढ़ा है । अंग्रेज शासन में हिंदी भाषियों की संख्या बढ़ने लगी थी । उस समय सैनिक तथा व्यापारी वर्ग मूलत: हिंदी भाषी क्षेत्रों के थे । अत: उनके साथ बातचीत करने के लिए हिंदी सीखना जरूरी हो गया था । दिन बदलने के साथ राष्ट्रीय एकता के सूत्र के रूप में हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ाने का प्रयास हुआ । असम में हिंदी शिक्षण की उपयोगिता को देखते हुए उस समय के जोरहाट के पुलिस अधीक्षक यज्ञराम खारघरीया ने सन् 1832 में बंगदेश से प्रकाशित 'समाचार दर्पण' में 'हिंदी व्याकरण और अभिधान (कोश)' नामक एक ग्रंथ रचना का संकल्प प्रकाशित किया था ।

सन् 1884 में कांग्रेस की स्थापना के साथ राष्ट्रीय आंदोलन ने जोर पकड़ा । इसके साथ देश के अन्य प्रांतों की भाँति असम में भी असमीया लोग राष्ट्रभाषा की आवश्यकता को महसूस करने लगे । असम में राष्ट्रभाषा के प्रचार के लिए संस्थागत प्रयास सन् 1926 में शिवसागर के असम पॉलिटेकनिक इनस्टिटिउट के प्रतिष्ठाता प्रयात भुवन चंद्र गगै के द्वारा हुआ था। शिवसागर के इस इनस्टिटिउट को काशी हिंदू विश्वविद्यालय से संबद्ध किया गया था।

असम में सन् 1934 में हिंदी शिक्षण और प्रचार का कार्य प्रारंभ हुआ था । हिंदी प्रचार की

अखिल भारतीय योजना के अनुचार बाबा राघवदास ने सन् 1934 में कई हिंदी भाषियों को असम में हिंदी के प्रचार-कार्य में लगाया । इसके तीन साल बाद काका साहेब कालेलकार, दादा धर्माधुकारी आदि के साथ बाबा राघवदास भी असम आये और कुछ हिंदी भाषी प्रचारकों को यहाँ हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए नियुक्त किया । वे प्रचारक प्रशिक्षित तो नहीं थे, लेकिन असमीया भाषा से परिचित थे । अत: वे अनुवाद पद्धति से शिक्षण कार्य करते थे । हिंदी के अध्ययन के लिए उस समय असम में पर्याप्त व्यवस्था न होने के कारण कई लोग काशी विद्यापीठ में हिंदी का अध्ययन करने गए थे।

असम में राष्ट्रभाषा के प्रचार के संस्थागत प्रयास के लिए यमुना प्रसाद श्रीवास्तव जी को वर्धा से असम भेजा गया था । उनके प्रयास से 3 नवंबर 1938 ई. को 'असम हिंदी प्रचार समिति' की स्थापना हुई । इस समिति की पहली बैठक 31 दिसंबर 1938 ई. को गुवाहाटी में हुई । इसके सभापति लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै थे । उन्होंने सभा में ही समिति को बारह सौ रुपये वार्षिक अनुदान देने की घोषणा की । इससे हिंदी प्रचार को एक गति मिली और सरकारी सहायता के फलस्वरूप विद्यालयों में हिंदी का प्रवेश हुआ । कालांतर में सन् 1952 में यही समिति असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति बनी ।

धीरे-धीरे असम सरकार ने अपनी ओर से राष्ट्रभाषा के प्रचार की जिम्मेदारी उठायी । हिंदी शिक्षकों के अभाव की पूर्ति के लिए सरकारी स्तर पर गोवालपारा जिले के दूधनै में एक हिंदी शिक्षण प्रशिक्षण विद्यालय की स्थापना की गई ।

असम में हिंदी का विरोध कहीं नहीं हुआ । असमीया समाज में हिंदी भाषा के प्रति रूचि होने के कारण ही सरकारी विद्यालयों में आज छठी कक्षा से आठवीं तक हिंदी विषय माध्यमिक विद्यालय के अन्य अनिवार्य विषयों में से एक है तथा नवीं और दसवीं में वैकल्पिक विषय के रूप में है । राज्य के अधिकतर महाविद्यालयों में हिंदी विषय का अध्ययन-अध्यापन मेजर सहित होता है । विश्वविद्यालयों में हिंदी का स्नातकोत्तर अध्ययन के अतिरिक्त शोध-कार्य भी होता है ।

असम सरकार की तरफ से भी हिंदी को कोई सुविधा नहीं मिली, ऐसा नहीं कहा जा सकता । हिंदुस्तान में असम सरकार ने सबसे पहले हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण की व्यवस्था की । सरकारी हिंदी पदाधिकारी की नियुक्ति की । सन् 1969 में असम के माध्यमिक विद्यालयों के हिंदी शिक्षकों को उचित शिक्षण प्राप्त कराकर विद्यार्थियों को शुद्ध और वैज्ञानिक हिंदी सिखाने के लिए उत्तर गुवाहाटी में 'हिंदी शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय' की स्थापना की गयी । इस महाविद्यालय में 'हिंदी शिक्षण पारंगत' (बी.एड. स्तरीय) पाठ्यक्रम का अध्यापन होता है । हिंदी की सशक्त स्थिति के कारण शैक्षिक

और साहित्यिक क्षेत्र में भी असम का स्थान आज बहुत पीछे नहीं है । यहाँ अनुवाद के अलावा हिंदी के उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता, निबंध आदि मुक्त लेखन को बढ़ावा मिला है । हिंदी के कई महत्वपूर्ण ग्रंथों का अनुवाद असमीया में प्रकाशित हुआ है । गुवाहाटी से कई समाचार-पत्र हिंदी में छपते हैं । लेकिन आज ये संस्थाएँ समस्याओं से घिरी हुई हैं । समस्याओं के निदान हेतु सरकारी सहानुभूति की विशेष आवश्यकता है ।

असम बहुभाषी राज्य है । यहाँ के अधिकतर हिंदी शिक्षकों तथा विद्यालयों की पहली भाषा हिंदी नहीं है । ऐसी स्थिति में हिंदी की और अधिक उन्नति के लिए भाषा के विभिन्न कौशलों, शिक्षण बिंदुओं को समेट कर पाठ्यक्रम बनाने के प्रति अधिक ध्यान होना चाहिए । विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के परिसरों में विद्यार्थियों के साथ शिक्षकों को हिंदी में बातें करनी चाहिए ताकि उन्हें हिंदी बोलने का अवसर मिले । सर्वशिक्षा अभियान, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान आदि का हिंदी विषय के प्रति विशेष ध्यान होने की आवश्यकता है । हिंदी पर सरकार की उत्साहवर्धक और सहानुभूतिशील दृष्टि भविष्य में असम राज्य में हिंदी और अधिक गति प्राप्त करेगी।

अंत में डॉ. सीताराम शास्त्री के स्वर में स्वर मिलाकर कहना चाहूँगी कि हिंदी मात्र एक देश की भाषा नहीं है । हिंदी एक नए विश्वधर्म और अंतरराष्ट्रीय अनुशासन तथा मानवीय समरसता का सूत्रपात करनेवाली भाषा है । इस तथ्य को समझते हुए वैश्विक मंच पर भाषाओं की अस्मिता के मध्य हिंदी की प्रतिष्ठा की दिशाओं को निर्धारित करने में हम असमीया हिंदी प्रेमियों की भूमिका सराहनीय होनी चाहिए ।

जय हिंद, जय हिंदी।

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का पुराना भवन

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का नया भवन

सरकारी हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय

संपर्क-सूत्र:
अध्यक्ष
सरकारी हिंदी शिक्षक शिक्षण महाविद्यालय
उत्तर गुवाहाटी,असम